प्रेस विज्ञप्ति

'श्रमण संघीय साध्वी उपप्रवर्तिनी कौशल्या कुंवर का देवलोकगमन'

उदयपुर में हुआ देह पंचतत्व में विलीन
हजारों श्रद्धालुओं ने नम आंखों से दी अन्तिम विदाई
महाप्रयाण यात्रा में उमड़ा जनसैलाब

कौशल्या गुरुणी नाम रहेगा से वातावरण गूंजायमान रहा।
उपाध्याय पुष्कर मुनि जी म. की संसारपक्षीय भाणजी थी : साध्वी उपप्रवर्तिनी कौशल्या कुंवर जी म.

उदयपुर : दिनांक – 20 अक्टूबर 2013।

श्रमण संघीय विश्व संत उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि जी म. व विदुषी महासाध्वी श्री सज्जन कुंवर जी म. की सुशिष्या 75 वर्षीय महासाध्वी उपप्रवर्तिनी श्री कौशल्या कुंवर जी म. का दिनांक 19 अक्टूबर 2013 को रात्रि 8.30 बजे उदयपुर शहर के सेक्टर पांच स्थित श्री गुरु पुष्कर नवकार तीर्थ भवन में संथारा पूर्वक देवलोकगमन हो गया है।

पुष्करवाणी ग्रुप ने बताया कि 75 वर्षीय उपप्रवर्तिनी साध्वी श्री कौशल्या जी म. पुष्कर परम्परा की ज्येष्ठ साध्वी थी। एवं उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि जी म. के सांसारिक जीवन में भाणजी थीं। साध्वीश्री पिछले कई दिनों से अस्वस्थ चल रहे थे, और उन्हें दिनांक 19 अक्टूबर 2013 को प्रातःकाल हॉस्पीटल भर्ती करा गया था। दिन में उनकी शिष्या साध्वी डॉ. श्री सुलक्षणप्रभा जी म. ने उन्हें चौविहार संथारा श्री संघ की साक्षी में करवाया था।

महासाध्वी उपप्रवर्तिनी श्री कौशल्या जी म. की पार्थिव देह रविवार 20 अक्टूबर को पंचतत्व में विलीन हो गई। महाप्रयाण यात्रा में हजारों श्रावक – श्राविकाऐं शामिल हुए। डोल यात्रा में सबसे आगे बैंड़ नवकार महामंत्र धुन लगाये व एक हाथी, पांच घोड़े शामिल थे। इससे पूर्व प्रातःकाल से ही सम्पूर्ण जैन समाज के विभिन्न सम्प्रदायों के लोग ऐसी धन्य आत्मा के नश्वर देह के दर्शन करने हजारों की संख्या में पहुंचे। पार्थिव देह को सज्जित एक पालकी में बैठाया गया था। 'णमो अरिहंताणं, णमो सिध्दाणं' सहित पांच पदों की नवकार मंत्र की वंदना से एवं जय महावीर, जय गुरु पुष्कर, जय गुरुणी कौशल्या के उद्घोष के साथ मौके पर उपस्थित प्रवर्तक गुरुदेव गणेश मुनि, उपप्रवर्तक जिनेन्द्र मुनि, लेखक भगवती मुनि 'निर्मल' व साध्वी उपप्रवर्तिनी दिव्यप्रभा, साध्वी विनयवती, सुदर्शनप्रभा, डॉ. सुलक्षणप्रभा, हेमवती व हर्षप्रभा साध्वी वृन्दों की उपस्थिति में शहर के सेक्टर 5 स्थित श्री गुरु पुष्कर नवकार तीर्थ भवन से अन्तिम महाप्रयाण यात्रा दोपहर 2 बजे प्रारम्भ हुई जो विभिन्न मार्गों से गुजरती हुई सेक्टर 3 स्थित मोक्षधाम पहुंची, मार्ग में उपस्थित जनसमूह 'जब तक सूरज चांद रहेगा कौशल्या गुरुणी नाम रहेगा', भगवान महावीर स्वामी के जयकारों के साथ साध्वी कौशल्या अमर रहे का घोष करता रहा, पर श्रद्धालुओं की आंखें नम थी। मार्ग में गुलाल व सिक्कों का उछाल गुरुभक्तों द्वारा किया जा रहा था। जिस मार्ग से यह महाप्रयाण यात्रा गुजरी वहां पर प्रत्येक मोहल्ले में सैकड़ों की संख्या में लोगों ने छतों एवं सड़कों पर खडे होकर ऐसी दिव्य विभूति को वंदन कर रहे थे। तय समय पर संस्कार स्थल पर विधि–विधान पूर्वक मंत्रोश्चार के साथ उनकी पार्थिव देह को पंचतत्व में विलीन किया गया। पुष्करवाणी ग्रुप ने बताया कि सांसारिक परिजनों में उनके भतीजे सुरेश पालीवाल व नवकार तीर्थ भवन के अध्यक्ष प्यारचंद कोठारी, कार्याध्यक्ष विजय सेठ, महामंत्री छगन बोकडिया व मंत्री मांगीलाल जैन सहित उदयपुर संघ तथा श्री तारक गुरु जैन ग्रन्थालय के सदस्यों ने चिता को मुखाग्नि दी। इस दौरान कस्बे में जैन समाज के सभी लोगों ने अपने प्रतिष्ठान बंद रखे। 75 वर्षीय उपप्रवर्तिनी साध्वी श्री कौशल्या जी म. पुष्कर परम्परा की ज्येष्ठ साध्वी थी। महासाध्वी उपप्रवर्तिनी श्री कौशल्या जी

म उपाध्याय पुष्कर मुनि के सांसारिक जीवन में भाणजी थीं। तत्पश्चात् श्रद्धांजली सभा संपन्न हुई, जिसमें आचार्य श्री शिवमुनि जी म., उपाध्याय श्री रमेश मुनि जी म., प्रवर्तक गणेश मुनि जी म., सलाहकार श्री दिनेश मुनि जी म., उपप्रवर्तक नरेश मुनि आदि चारित्रआत्माओं के श्रद्धांजली सन्देशों का वाचन कर साध्वी श्री के महाप्रयाण को समाज की अपूर्णीय क्षति बताया।

जीवन परिचय :–

मूलतः गोगुन्दा तहसील के ढोल गांव के पालीवाल ब्रहाण लादूराम के यहां जन्म लेकर दस वर्ष की वैराग्य अवस्था में देवास (उदयपुर) में श्री मगनलाल जी म. के मुखारविन्द से जैन भागवती दीक्षा अंगीकार कर उपाध्याय पुष्कर मुनि को अपना गुरु व महासाध्वी श्री सज्जनकुंवर जी म. का शि यत्व ग्रहण किया। महासाध्वी उपप्रवर्तिनी श्री कौशल्या जी म उपाध्याय पुष्कर मुनि के सांसारिक डजीवन में भाणजी थीं। साध्वी श्री के बड़े भाई ने भी दीक्षा ग्रहण की जो वर्तमान में लेखक भगवती मुनि 'निर्मल' के नाम से विख्यात है। महासती जी का जीवन जप, तप, स्वाध्याय, मौन, ध्यान से परिपूर्ण रहा। उन्होंने अपने जीवन काल में 60 हजार किलोमीटर की विहार यात्रा कर जिनशासन की महत्ती प्रभावना की। उन्होंने अपनी शिष्य–शिष्याओं को उत्कृष्ट धर्म के संस्कार देकर एक आदर्श स्थापित किया है। 22 अप्रैल 2005 को उदयपुर में ही आपश्री उपप्रवर्तिनी पद से शोभित हुए थे। श्रमण परम्परा का 66 वर्शों तक पालन करते हुए देवलोक वासी हुए।

फोटो कैप्शन :
पी . 1 – पालकी में महासाध्वी उपप्रवर्तिनी श्री कौशल्या जी म.
पी . 2 – महाप्रयाण यात्रा में उमड़ा जनसैलाब।
पी 3 देह को मुखाग्नि देते हुए।